टारगेट टाइम्स
तैयारी की पूरी जानकारी हिन्दी मे SarkariHelp.com

पृष्ठ-16
₹20/-

लोक सेवा आयोग, S.I., T.E.T एवं अन्य परीक्षाओं हेतु उपयोगी

WWW.SARKARIHELP.COM

सामान्य हिन्दी

WWW.SARKARIHELP.COM

विषय वस्तु

1. वर्णमाला
2. तद्भव-तत्सम
3. रस, छंद, अलंकार
4. समास एवं अभ्यास प्रश्न पत्र
5. लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे
6. रचना-रचनाकार
7. पर्यायवाची एवं विलोम
8. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास
9. संधि एवं अभ्यास प्रश्न पत्र
10. वाक्यांशों के लिए एक शब्द
10.संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण
11.शब्द भंडार, काल,
12.वाक्य संशोधन-शुद्ध-अशुद्ध
13.अनेकार्थी शब्द
14.उपसर्ग एवं प्रत्यय, कारक
7 मॉडल प्रश्न-पत्र

हिन्दी भाषा एवं वर्णमाला

भाषा-भावों को अभिव्यक्त करने के माध्यम को भाषा कहते है।

हिन्दी भाषा-मूलतः आर्य परिवार की भाषा है। इसकी लिपि देवनागरी है जिसका विकास ब्राह्मी लिपि (इसी लिपि में वैदिक साहित्य रचित) से हुआ।

हिन्दी के विकास में-वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश एवं विदेशी भाषाओं-अरबी, फारसी आदि का योगदान है।

वर्ण-भाषा की सबसे छोटी मौखिक ध्वनि या उसके लिखित रूप को 'वर्ण'कहा जाता है। वर्ण का अर्थ-अक्षर भी है जिसका अर्थ-अनाशवान है।अतः'वर्ण अखंड मूल ध्वनि का नाम है। जिसके खण्ड नहीं हो सकते।

वर्णमाला-किसी भाषा के मूल ध्वनियों के व्यवस्थित समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं। देवनागरी वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण है-

1.स्वर-वे वर्ण जिनके उच्चारण के लिए किसी अन्य वर्ण की आवश्यकता नहीं होती स्वर कहलाते है।इनकी संख्या(उच्चारण दृष्टि)11है।

जैसे-अ,आ,इ,ई, उ, ऊ,ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

अनुस्वार-अं(÷), **विसर्ग**-अः (:)

अग्र स्वर-जिन स्वरों के उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग सक्रिय होता है, उन्हें 'अग्रस्वर' या आगे के स्वर कहा जाता है।**जैसे**-ई, ए,ऐ, अ, इ

पश्च स्वर-जिन स्वरों के उच्चारण में जिह्वा का पश्च भाग सक्रिय होता है उन्हें पश्च स्वर या पीछे के स्वर कहा जाता है। **जैसे**-आ,उ,ऊ,ओ, औ।

संवृत स्वर-संवृत्त शब्द का अर्थ होता है-कम खुलना। जिन स्वरों के उच्चारण में मुख कम खुलता है-उन्हें संवृत्त स्वर कहते हैं-**जैसे**-ई,ऊ।

2- ओष्ठाकृति के आधार पर स्वरों के भेद-

वृत्ताकार स्वर-जिन स्वरों के उच्चारण में होठों का आधार गोल हो जाता है, उन्हें वृत्ताकार स्वर कहते हैं। **जैसे**-उ,ऊ,ओ, औ।

अवृत्ताकार स्वर-जिन स्वरों के उच्चारण में होंठ गोल न होकर अन्य आकार में खुलें उन्हें अवृत्ताकार स्वर कहते हैं।

3.उच्चारण समय के आधार पर स्वर भेद-

ह्रस्व स्वर -जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय अर्थात् सबसे कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं।

उदाहरण-अ, इ, उ ह्रस्व स्वर है।

दीर्घ स्वर -जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्राओं का या एक मात्रा से अधिक समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं।

उदाहरण-आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ दीर्घ स्वर है।

प्लुत स्वर -जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्राओं से भी अधिक समय लगे, उन्हें प्लुत, स्वर कहते हैं। जैसे-'ओम्' में ओ को दीर्घ स्वर से अधिक खींचते पर 'ओउम्' लिखा जाता है। आजकल व्यवहारिक रूप से यह प्रचलन में नहीं है।

स्वर भेद का महत्व- हिन्दी में स्वरों का ज्ञान होना अनिवार्य है। स्वरों के भेद का सही ज्ञान न होने पर उच्चारण में ही नहीं अपितु अर्थ में भी परिवर्तन हो जाता है।

जैसे-	ह्रस्व स्वर	दीर्घ स्वर
	कुल	कूल
	ओर	और
	खोल	खौल
	जाति	जाती

व्यंजन भेद- अर्थ एवं महत्व

स्वरों की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते है। जिन ध्वनियों का उच्चारण करते समय श्वास मुख के किसी स्थान विशेष(तालु,मूर्धा,ओष्ठ या दाँत) आदि का स्पर्श करते हुए निकले उन्हें व्यंजन कहते हैं। परंपरागत रूप से व्यंजनों की संख्या33मानी जाती है।

व्यंजनों का वर्गीकरण-व्यंजनों को उच्चारण की दृष्टि से दो आधारों पर विभाजित किया जाता है।**1.उच्चारण-स्थान**- व्यंजन ध्वनियों का उच्चारण करते समय किसी श्वास-वायु किसी न किसी मुख अवयव से अवश्य टकराती है। उसी मुख अवयव को उच्चारण स्थान कहते है। इन्हीं के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण किया जाता है।

कंठ्य (गले से)- क,ख,ग,घ, ड़,ह।
तालव्य (तालु से)- च,छ,ज,झ,ञ, श।
मूर्धन्य (मूर्धा भाग से)- ट,ठ,ड,ढ,ण,ष।
दत्य (दांतों से) - स,त,थ,द,ध,न।

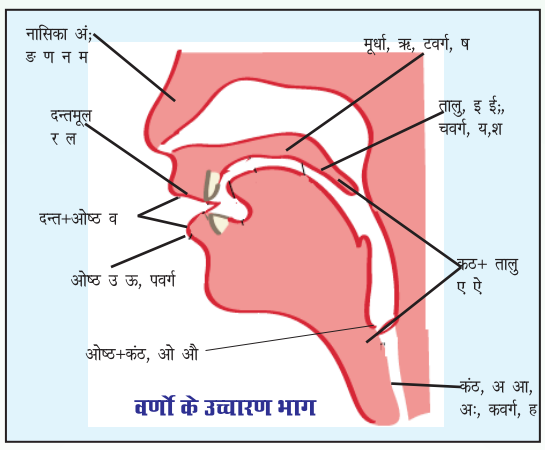

ओष्ठ्य (ओठों से)- प,फ,ब,भ,म
दंतोष्ठ्य (ओष्ठ एवं दाँतों से)- य,र,ल,व

2. प्रयत्नः- ध्वनियों को उच्चारण में होने वाले यत्न को 'प्रयत्न' कहा जाता है इन्हें तीन प्रकार का माना गया है।
1. श्वास-वायु की मात्रा, 2. स्वर तंत्री में कंपन
3. मुख-अवयवों के द्वारा श्वास को रोकना।

1.श्वास-वायु की मात्राः- इस मात्रा के आधार पर भी दो वर्गीकरण किए गये है-1. अल्पप्राण 2. महाप्राण

1.अल्पप्राण-जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु कम मात्रा में निकलती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते है-**जैसे**-क,ख,ग,ड़, च, ज, ञ, ट्, ड, ण, त,द, न, प, ब,म,य,र, ल,व ।

2.महाप्राण-जिन ध्वनियों के उच्चारण में श्वास-वायु अधिक मात्रा में लगती है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं।जैसे-घ,छ,झ,ठ,ढ, थ,ध,फ, भ,श,ष, स, ह,न,म ।

2.स्वर तंत्री के कंपन पर आधारित वर्गीकरण-गले की स्वर तंत्री जब वायु के वेग से कॉपकर जब बजने लगती है तब इन स्वर तंत्रियों में होने वाली कंपन, नाद या गूंज के आधार पर व्यंजनों के दो भेद किए जाते हैं-**सघोषः**-जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन पैदा होती है उन्हें सघोष व्यंजन कहते हैं-**जैसे**-ग,घ,ड,ज,झ,ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न ब्, भ,म

अघोष-जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वर तंत्रियों में गूंज उत्पन्न नहीं होती, वे'अघोष'है। **जैसे**-क,ख,च,छ,ट,ठ,त,थ,प,फ,श,ष, स।

3. अवयवों के अवरोध द्वारा-ध्वनियों का उच्चारण करते समय हमारी जीभ-मुख आदि अवयव अनेक प्रयत्न करते है। इसी आधार पर वर्गीकरण किया गया है।

स्पर्शः- जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय हमारे मुख के अवयव का आपस में स्पर्श होता है, उन्हे स्पर्श व्यंजन कहते है।

क	ख	ग	घ	ड़
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ़	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म

स्पर्श-संघर्षीः-जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु पहले किसी मुख अवयव से टकराती है, फिर रगड़ खाते हुए बाहर निकलती है, उन्हें स्पर्श-संघर्षी व्यंजन कहते हैं। जैसे- च,छ,ज,झ,ञ

संघर्षी-जिन व्यंजनों के उच्चारणमें श्वास-वायु मुख-अवयवों से संघर्ष करते हुए बाहर निकलती है, उन्हें संघर्षी व्यंजन कहा जाता है। स, श, ष, ह,फ,ज संघर्षी व्यंजन है इन्हें ऊष्म ध्वनियाँ भी कहते है।

अन्तःस्थः- व्यंजन और स्वर के ठीक मध्य स्थित होने के कारण इनका नाम अन्तःस्थ रखा गया है।य,र,ल,व को अन्तःस्थ व्यंजन कहते है क्योंकि इनके उच्चारण में वायु का अवरोध कम होता है।

उत्क्षिप्त- जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ- का लगभग मूर्धा को स्पर्श करके झटके से वापस आता है, उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन कहते है। ट,ठ,ड,ढ,ण,ढ, ड़ उत्क्षिप्त व्यंजन है।

हिन्दी शब्दकोश में- क्ष त्र ज्ञ का कोई अलग शब्द संग्रह नहीं मिलता क्योंकि ये संयुक्ताक्षर होते है। इनकी जानकारी के लिए संयुक्ताक्षरों के पहले अक्षर के आधार पर इनका ज्ञान प्राप्त किया जाता है। **जैसे**-क्ष(क्+ष), त्र (त+र), ज्ञ (ज+ञ) आदि ।

शब्द-वर्णो के सार्थक समूह को शब्द कहते है जो रचना के आधार पर 3 प्रकार के होते है।**1.रूढ़**- जिन शब्द के सार्थक खंड न हो सकें जैसे-रात, घर, पुस्तक।**2.यौगिक**- वे शब्द जिनमें रूढ़ शब्द के अतिरिक्त एक अन्य रूढ़ शब्द होता है जैसे पुस्तकालय ('पुस्तक' रूढ़+ 'आलय' रूढ़) **3.योगरूढ़**- जिन यौगिक शब्दों का प्रयोग रूढ़ अर्थ में किया जाता है जैसे-पंकज(पंक+ज)इसका अर्थ कमल।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1- किन अनुच्छेदों में राजभाषा का प्रावधान है?
(a)443-135तक (b)334-365 तक
(c)343-351तक (d)434-451 तक
उत्तर-(c)

2- वर्ष 1955 ई. के गठित प्रथम भाषा आयोग के अध्यक्ष थे-
(a)जी.बी.पंत (b)बी.जी. खेर (c)सुनीति चटर्जी (d)बी. सुब्बाराव
उत्तर-(b)

3- निम्न में से 'अल्पप्राण' वर्ण कौन से है?
(a)अ,आ (b)क,ग (c)थ,ध (d)फ, भ
उत्तर-(b)

4-हिन्दी वर्णमाला में अयोगवाह वर्ण कौन-से है?
(a)अ,आ (b)इ,ई (c)उ,ऊ (d)अं, अः
उत्तर-(d)

5-क,ग,ज,फ ध्वनियाँ किसकी है?
(a)अंग्रेजी (b)हिन्दी (c)उर्दू (d)अरबी-फारसी
उत्तर-(d)

6-हिन्दी में मूलतः वर्णो की संख्या कितनी है?
(a)50 (b)51 (c)52 (d)53
उत्तर-(c)

7-अघोष वर्ण कौन-सी है?
(a)स (b)अ (c)ज (d)ह
उत्तर-(a)

8-य,र,ल व व्यंजनों को कहते हैं-
(a)स्पर्श व्यंजन (b)अन्तःस्थ व्यंजन
(c)ऊष्म व्यंजन (d)उपर्युक्त सभी
उत्तर-(b)

9-प्रयत्न के आधार पर 'ल' किस प्रकार की ध्वनि है?
(a)पार्श्विक (b)उत्क्षिप्त (c)प्रकंपित (d)संघर्षहीन
उत्तर-(a)

10-महाप्राण ध्वनियाँ व्यंजन-वर्ग में किससे संबंधित है?
(a)पहला, दूसरा (b) दूसरा, तीसरा
(c)दूसरा, चौथा (d)पहला, चौथा
उत्तर-(c)

11-'क्ष' वर्ण किसके योग से बना है?
(a) क्+ष (b) क्+च (c) क्+छ (d) क्+श
उत्तर-(a)

12-हिन्दी की स्पर्श घोष, महाप्राण, ओष्ठ व्यंजन ध्वनि है-
(a) भ् (b) द् (c) थ् (d) ह्
उत्तर-(c)

13-हिंदी की 'श' ध्वनि है-
(a) मूर्धन्य (b) तालव्य (c) दत्य (d) ओष्ठ्य
उत्तर-(b) UPTGT (Hindi)Exam2009

14-'श', 'ष', 'स', 'ह' कौन से व्यंजन कहलाते हैं?
(a) प्रकम्पी व्यंजन (b) स्पर्शी व्यंजन
(c) स्पर्श व्यंजन (d) ऊष्म-संघर्षी व्यंजन
उत्तर-(d) UPTGT (Hindi)Exam2004

तद्भव व तत्सम

हिन्दी भाषा में शब्दों का वर्गीकरण उत्पत्ति के आधार पर 4 वर्गों में किया जाता है-**1.** उत्पत्ति व इतिहास की दृष्टि से **2.** रचना या बनावट के आधार पर **3.** प्रयोग या व्याकरण **4.** अर्थ के अनुसार **उत्पत्ति** के आधार पर। शब्दों के भी पाँच विभाग किये जाते हैं-

उत्पत्ति के आधार
तत्सम | तद्भव | देशज | विदेशी | संकर

तत्सम-तत् + सम अर्थात 'उसके समान' संस्कृत के ऐसे शब्द जो हिन्दी में ठीक उसी तरह प्रयोग किये जाते हैं। जैसे संस्कृत में है।

उदाहरण- सर्वदा, राष्ट्र, सूर्य, पत्र, चन्द्र, दुग्ध, घृत, गृह, कर्म आदि।

तद्भव- तत् + भव = उत्पन्न होना या विकसित होना अर्थात जो संस्कृत से उत्पन्न होकर विभिन्न कालखण्डों में प्राकृत पाली, अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी भाषा में आये हैं। जैसे- कृष्ण से विकसित होकर कान्ह

WWW.SARKARIHELP.COM WWW.SARKARIHELP.COM

अभ्यास में दिये गये अधिकांश प्रश्न आयोग की विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये है।

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
अच्छर	अक्षर	चरन	चरण
अटारी	अट्टालिका	छाया	छत्र
अफीम	अहि-फेन	छिन	क्षण
आँख	अक्षि	छेद	छिद्र
आँसू	अश्रु	छुरी	क्षुरिका
आज	अद्य	जनेऊ	यज्ञोपवीत
आप	आत्मा	जौं	यव
अम्मा	अंब	जोगी	योगी
ओंठ	ओष्ठ	जामुन	जम्बुल
अच्छत	अक्षत	जुआ	द्यूत
अँगोछा	अंग प्रौंछा	मक्खी	मक्षिका
अँगीठी	अग्निष्ठिका	मछली	मत्स्य
अगुवा	अग्रणी	मोर	मयूर
आँवला	आमलकः	मच्छर	मत्सर
इलायची	एला	मदारी	मंत्रकारी
इतवार	आदित्यवार	मसान	श्मशान
इमली	अम्लिका	महुआ	मधूक
ईंट	इष्टिका	मिठाई	मिष्टि
उजला	उज्ज्वल	मीत	मित्र
ऊँगली	अंगुलि	मूठ	मुष्टि
ऊँट	उष्ट्र	मेढक	मंडूक
उल्लू	उलूक	मौत	मृत्यु
काठ	काष्ठ	मानुस	मनुष्य
कुँआ	कूप	रस्सी	रज्जु
कान्ह	कृष्ण	रूठा	रुष्ट
कोयल	कोकिल	रुगण	रोगी
कौआ	काकः	रोना	रोदन
कपूर	कर्पूर	लीलार	ललाट
कोढ़	कुष्ठ	लोहार	लौहकार
कूची	कूर्चिका	सुहाग	सौभाग्य
कैथा	कपित्थ	सियार	शृंगाल
खत्री	क्षत्रिय	सपना	स्वप्न
खेत	क्षेत्र	साँवला	श्यामल
खाँसी	कास	सावन	श्रावण
गधा	गर्दभ	सूँड़	शुण्डा
गेहूँ	गोधूम	सूखा	शुष्क
गिद्ध	गृध्र	सरग	स्वर्ग
घर	गृह	सुमिरन	स्मरण
घोड़ा	घोटक	हाट	हट्ट
घरनी	गृहणी	हल्दी	हरिद्रा
घूँघट	गुंठन	हँसी	हास्य
घी	घृत	हाथ	हस्त
चबाना	चर्वण	हाथी	हस्तिन्
चाँदनी	चन्द्रिका	हींग	हिंगु
चिड़िया	चटिका	होली	होलिका
भौंरा	भ्रमर	गाय	गो
जेठ	ज्येष्ठ	नाक	नक्र
केला	कदली	बहिन	भगिनी
कबूतर	कपोत	बैल	बलीवर्द
कपास	कर्पास	ससुर	श्वसुर
दूध	दुग्ध	भतीजा	भ्रातृव्य
करोड़	कोटि	मौसी	मातृश्वसा
आम	आम्र	सास	श्वश्रू
साला	श्यालक	अदरक	आर्त्रक
देवर	द्विवर	अनाड़ी	अनार्य
हाथी	हस्ती	करतब	कर्त्तव्य
हल्दी	हरिद्रा	किसान	कृषक
सोंठ	शुष्ठि	तेल	तैल
हड्डी	अस्थि	त्यौहार	तिथिवार
अमिय	अमृत	हीरा	हीरक
चौखट	चतुष्काठ	हिरन	हरिण
कुत्ता	कुक्कुर	गँवार	ग्रामीण
भौजाई	भ्रातृजाया	दही	दधि
मुदरी	मुद्रिका	भगत UPB.Ed.-2014	भक्त
पोखर UPNT-2010	पुष्कर	खेत	क्षेत्र
गोबर	गोमय	धुआं	धूम्र
पान	पर्ण	ओझा	उपाध्याय

प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. 'सींग' शब्द का तत्सम रूप है-
(a) श्रृंग (b) शिंग (c) सिंग (d) शृंग
उत्तर-(d) R.O.-2014

2. 'प्रिय' का तद्भव शब्द है-
(a) पिया (b) प्रेम (c) प्रेमी (d) प्रेयशी
उत्तर-(a) उ०प्र० राजस्व निरीक्षक-2014

3. 'निम्नलिखित शब्दों में से कौन सा तत्सम शब्द नहीं है?
(a) कुसुम (b) भूषिका (c) वंश (d) नेह
उत्तर-(d) उ०प्र० राजस्व निरीक्षक-2014

4. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द तद्भव है?
(a) स्कन्ध (b) कपोत (c) ईर्ष्या (d) हल्दी
उत्तर-(d) उ०प्र० राजस्व निरीक्षक-2014

5. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द तत्सम है?
(a) साँप (b) चिन्ह (c) बीणा (d) विस्मय
उत्तर-(b) उ०प्र० राजस्व निरीक्षक-2014

6. 'गृध' शब्द का तद्भव रूप है-
(a) गीधना (b) गृध (c) गीधी (d) गीध
उत्तर-(d) R.O./A.R.O.(Pre) -2015

7. 'गेहूँ' शब्द का तत्सम है-
(a) गोधूम (b) गोहूँ (c) गोहुन (d) गोधुम
उत्तर-(a) R.O./A.R.O.(Pre) -2010

8. 'गोबर' का तत्सम रूप है-
(a) गुर्बर (b) गोविष्ट (c) गड्वर (d) गुब्बार
उत्तर-(b) R.O./A.R.O.(Pre) -2010

9. 'अंगीठी' का तत्सम है-
(a) अग्निका (b) अंनिष्ठिका (c) अग्निष्ठिका (d) अग्निष्ठिकी
उत्तर-(c) R.O./A.R.O.(Pre) -2010

10. 'तिक्त' का तद्भव है-
(a) तीता (b) तीखा (c) तिक्ता (d) तिखन
उत्तर-(a) R.O./A.R.O.(Pre) -2010

11. 'खाट' का तत्सम रूप है-
(a) खट्वा (b) खाट्वा (c) खाटव (d) खटिया
उत्तर-(a) U.P.N.T. Exam-2006

12. 'दाहिनी' का तत्सम रूप है।
(a) दाक्षिण्य (b) दक्षिण (c) दाहिणा (d) दायाँ
उत्तर-(b) U.P.N.T. Exam-2006

13. 'निम्नलिखित शब्दों में यह तद्भव शब्द है:-
(a) विहग (b) खग (c) पक्षी (d) पंक्षी
उत्तर-(d) U.P.N.T. Exam-2006

14. 'ससुर शब्द का तत्सम रूप होगा-
(a) सस्वर (b) स्वश्रु (c) श्वसुर (d) ससुर
उत्तर-(c) U.P.N.T. Exam-2006

15. 'चूरन' का तत्सम शब्द है-
(a) चौर (b) चूर्ण (c) चर्म (d) चक्षु
उत्तर-(b)

16. 'ढीठ' शब्द का तत्सम है-
(a) दृष्ट (b) पुष्ट (c) दृश्य (d) धृष्ट
उत्तर-(d)

रस

परिभाषा:-काव्य को पढ़ने से जिस आनंद की प्राप्ति होती है अर्थात् जिस अनिर्वचनीय भाव का संचार हृदय में होता है, उसी आनंद को रस कहा जाता है। रस को काव्य की आत्मा के समान माना जाता है।

सर्वप्रथम आचार्य भरत मुनि ने अपने ग्रंथ 'नाट्य शास्त्र' में रस का विवेचन इस प्रकार किया है। "विभानुभाव व्यभिचारि संगोयाद्रस निष्पत्तिः"। इन्हें रस संप्रदाय का प्रवर्तक भी माना जाता है।

आचार्य भरत मुनि ने रसों की संख्या आठ मानी है किन्तु अभिनव गुप्त ने नौ रसों को मान्यता दी है। अतः अब रसों की संख्या नौ मानी जाती है। शृंगार रस में ही वात्सल्य एवं भक्ति रस भी शामिल है।

रस	स्थायी भाव	रस	स्थायी भाव
शृंगार	रति	रौद्र	क्रोध
करूण	शोक	अद्भुत	आश्चर्य, विस्मय
हास्य	हास	वीभत्स	जुगुप्सा
वीर	उत्साह	शांत	निर्वेद या निवृत्ति
भयानक	भय	वात्सल्य	वात्सल्य, रति
		भक्ति रस	अनुराग

रस के अंग- रस के चार अंग माने गये हैं-
स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव।

1. **स्थायी भाव**- स्थायी भाव का अर्थ होता है प्रधान भाव। स्थायी भाव ही रस का आधार है। एक रस के मूल में एक स्थायी भाव विद्यमान रहता है।
2. **विभाव**- जो पदार्थ, व्यक्ति, परिस्थित व्यक्ति के हृदय में भावोद्रेक उत्पन्न करता है, वह विभाव कहलाता है।
विभाव दो प्रकार के होते हैं-उद्दीपन विभाव, आलंबन विभाव।
3. **अनुभाव**-मनोभावों को व्यक्त करने वाले शारीरिक विकार अनुभाव कहलाते हैं।
ये भाव सात्विक, मानसिक और कायिक होते हैं।
4. **संचारी भाव/व्यभिचारी भाव**- मन में संचरण करने वाले भाव संचारी भाव कहलाते हैं।
ये भाव पानी के बुलबुलों के समान उठते और विलीन हो जाने वाले भाव होते हैं।

रस के भेद- रसों की संख्या नौ मानी जाती हैं।

1. **शृंगार रस**- इसका स्थायी भाव 'रति' है।
नायक-नायिका के सौन्दर्य तथा प्रेम सम्बन्धी वर्णन को शृंगार रस कहते हैं। शृंगार के दो भेद होते हैं।
(क) संयोग शृंगार (ख) वियोग (विप्रलम्भ) शृंगार

(क) **संयोग शृंगार**-जहाँ नायक-नायिका के मिलन का वर्णन होता है वहाँ संयोग शृंगार होता है।
जैसे- बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करें, भौंहनि हँसै, दैन कहै, नटि जाय।।

(ख) वियोग शृंगार-जहाँ नायक-नायिका की वियोगावस्था (विरह) का वर्णन होता है वहाँ वियोग शृंगार होता है।
जैसे- निसि दिन बरसत नयन हमारे।
सदा रहति पावस ऋतु हम पै जब ते स्याम सिधारे।

2. **हास्य रस**-इसका स्थायी भाव 'हास' है।
जहाँ विकृत, आकार, वेश-भूषा, चेष्टा आदि के वर्णन से उत्पन्न हास्य को हास्य रस कहा जाता है।
जैसे- तंबूरा ले मंच पर बैठे प्रेमप्रताप,
साज मिले पंद्रह मिनट, घंटा भर आलाप।
घंटा भर आलाप, राग में मारा गोता,
धीरे-धीरे खिसक चुके थे सारे श्रोता।।

3. **करुण रस**- इसका स्थायी भाव 'शोक' है।
किसी प्रिय व्यक्ति के चिर-विरह से उत्पन्न होने वाली शोक अवस्था के परिपाक को करुण रस कहते हैं।
जैसे- सोक विकल सब रोंवहिं रानी। रूपु सीलु बलु तेज बखानी।।
करहिं विलाप अनेक प्रकारा।परिहिं भूमि तल बारहिं बारा।।

4. **वीर रस**- इसका स्थायी भाव 'उत्साह' है।
उत्साह नामक स्थायी भाव जब विभावादि के संयोग से परिपक्व होकर रस रूप में परिणत होता है तब वही वीर रस होता है।
जैसे- वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।
सामने पहाड़ हो कि सिंह की दहाड़ हो।
तुम कभी रुको नहीं, तुम कभी झुको नहीं।।

5. **रौद्र रस**- इसका स्थायी भाव 'क्रोध' है।
किसी व्यक्ति के द्वारा क्रोध में किए अपमान आदि से उत्पन्न क्रोध के भाव को रौद्र रस कहते हैं।
जैसे- अविरस बोले वचन कठोर, बेगि देखाउ मूढ़ नत आजू।
उलटऊँ महि जँह लग तवराजू।

6. **भयानक रस**- इसका स्थायी भाव 'भय' है।
किसी भयानक दृश्य को देखने से उत्पन्न भय की अवस्था को भयानक रस कहते हैं।
जैसे- उधर गरजती सिंधु लहरियाँ, कुटिल काल के जालों सी।
चली आ रहीं फेन उगलती, फन फैलाये व्यालों सी।।

7. **वीभत्स रस**- इसका स्थायी भाव 'जुगुप्सा' है।
जुगुप्सा स्थायी भाव जब अनुभाव, विभाव आदि के द्वारा परिपक्व अवस्था में पहुँच जाए, वीभत्स रस कहलाता है।
जैसे- सिर पर बैठ्यो काग आँख दोउ खात निकारत
खींचत जीभहिं स्यार अतिहि आनंद उर धारत।
गीध जांघि को खोदि-खोदि कै मांस उपारत
स्वान आंगुरिन काटि-काटि कै खात विदारत।।

8. **अद्भुत रस**- इसका स्थायी भाव 'आश्चर्य' है।
आश्चर्यजनक वर्णन के द्वारा उत्पन्न भावों की अवस्था को अद्भुत रस कहते है।
जैसे- देख यशोदा शिशु के मुख में, सकल विश्व की माया।
क्षण-भर को वह बनी अचेतन, हिल न सकीं कोमल काया।

9. **शांत रस**-इसका स्थायी भाव 'निर्वेद' है।
अनित्य और असार तथा परमात्मा के वास्तविक ज्ञान से विषयों के वैराग्य से उत्पन्न रस परिपक्व होकर शान्ति में परिणत हो जाता है।
जैसे- मन रे तन कागद का पुतला।
लागै बूँद बिनसि जाय छिन में, गरब करै क्या इतना।।

प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. स्थायी भावों की संख्या कुल कितनी है? **उत्तर**-(a)
(a) नौ (b) दस (c) ग्यारह (d) बारह

2. काव्य में कितने रस माने जाते हैं? **उत्तर**-(c)
(a) छः (b) सात (c) नौ (d) दस

3. काव्य के आस्वादन से जो आनन्द प्राप्त होता है, उसे क्या कहते है? **उत्तर**-(d)
(a) अलंकार (b) छन्द (c) उपसर्ग (d) रस

4. रस के कितने अंग होते है? **उत्तर**-(b)
(a) दो (b) चार (c) पाँच (d) छः

5. करूण रस का स्थायी भाव क्या है? **उत्तर**-(b)
(a) विस्मय (b) शोक (c) भय (d) रति

6. शृंगार रस का स्थायी भाव हैं- **उत्तर**-(d)
(a) उत्साह (b) शोक (c) हास (d) रति

7. जुगुप्सा कौन से रस का स्थायी भाव है? **उत्तर**-(d)
(a) शान्त रस (b) करूण रस (c) अद्भुत (d) वीभत्स

8. शान्त रस का स्थायी भाव क्या है? **उत्तर**-(d)
(a) जुगुप्सा (b) क्रोध (c) शोक (d) निर्वेद

9. विस्मय स्थायी भाव किस रस में होता है? **उत्तर**-(c)
(a) हास्य (b) शान्त (c) अद्भुत (d) वीभत्स

10. सर्वश्रेष्ठ रस किसे माना जाता है? **उत्तर**-(b)
(a) रौद्र रस (b) शृंगार रस (c) करूण रस (d) वीर रस

11. 'शान्त रस' की उत्पत्ति कब होती है? **उत्तर**-(a)
(a) संसार से वैराग्य होने पर (b) क्रोध भाव दर्शाने के बाद
(c) घोर विनाश के पश्चात् (d) भय की स्थिति उत्पन्न होने पर

12. कवि बिहारी मुख्यतः किस रस के कवि हैं? **उत्तर**-(c)
(a) करूण (b) भक्ति (c) शृंगार (d) वीर

13. रौद्र रस का स्थायी भाव क्या हैं? **उत्तर**-(c)
(a) भय (b) विस्मय (c) क्रोध (d) शोक

14. दी गई पंक्तियों में प्रयुक्त रस के सही भेद का चयन कीजिए। **उत्तर**-(c)
किलक अरे मैं नेह निहारूँ
(a) भय (b) विस्मय (c) क्रोध (d) शोक

15. देख समस्त विश्व-सेतु से मुख में, यशोदा विस्मय सिन्धु में डूबी। **उत्तर**-(a)
(a) अद्भुत (b) शान्त (c) वीभत्स (d) रौद्र

16. 'यशोदा हरि पालनैं झुलावैं। **उत्तर**-(b)
हलरावैं दुलराय मल्हावैं
जोई सोई कछु गावैं।।
इस अवतरण में कौन-सा रस है?'
(a) शृंगार रस (b) वात्सल्य रस (c) शांत (d) वीर रस

17. नभ में झपटत बाज लेखि, भूल्यों सकल प्रपंच। **उत्तर**-(b)
कंपति तनु ब्याकुल नयन, लावक हिल्यों ने रंच।।

WWW.SARKARIHELP.COM
WWW.SARKARIHELP.COM

बोली-किसी क्षेत्र विशेष में या स्थानीय स्तर पर बोली जाने वाली भाषा बोली कहलाती है। इसे अल्पविकसित भाषा की श्रेणी में माना जाता है।
उपभाषा-क्षेत्रीय बोली का विकसित रूप है। इसमें कई बोलियाँ शामिल रहती है तथा इसमें साहित्य की रचना भी की जाती है।

इस अवतरण में कौन-सा रस है?'
(a) रौद्र रस (b) वीभत्स रस (c) भयानक रस (d) वीर रस

18. गुरु गोविंद तो एक है, दूजा यह आकार। आपा आपा मोटि जीवति मरै, तो पावे करतार।। **उत्तर**-(d)
उपर्युक्त दोहे में किस रस का परिपाक हुआ है?
(a) शृंगार रस (b) करूण रस (c) अद्भुत रस (d) शांत रस

19. किस रस को 'रसराज' कहा जाता है? **उत्तर**-(a)
(a) शृंगार रस (b) वीर रस (c) हास्य रस (d) उपरोक्त में कोई नहीं

20. हिन्दी साहित्य का नौवाँ रस कौन-सा है? **उत्तर**-(c)
(a) भक्ति रस (b) वात्सल्य रस (c) शांत रस (d) करूण रस

छन्द

छन्द-छन्द शब्द संस्कृत के छिदि धातु से बना है। छिदि का अर्थ है-आच्छादित करना। सर्वप्रथम छन्द की चर्चा ऋग्वेद में आई है। छन्द शास्त्र का प्रथम प्रणेता आचार्य पिंगल को माना जाता है। इनकी रचना 'छन्दः सूत्रम्' है। **अतः कहा जाता है** कि छन्द वह सुन्दर आवरण है जो कविता-कामिनी की सुन्दरता में चार चाँद लगा देता है।

परिभाषा-जिन रचनाओं को वर्ण, मात्रा, गति, तुक, यति आदि नियमों से बद्ध कर दिया जाता है उन्हें छन्द कहते हैं।

छन्द के अंग-प्राचीन समय से ही साहित्य में छन्दों की योजना होती रही है। छन्दों को समझने के उसके अंगों को समझना आवश्यक है।

1. वर्ण 2. मात्रा 3. यति 4. गति
5. तुक 6. लघु 7. गुरु 8. गण।

1. वर्ण- वर्ण को ही अक्षर कहते हैं। वह छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े नहीं किये जा सकते इसके दो भेद हैं-

(क) ह्रस्व- जिन वर्णों के उच्चारण में कम समय लगे वे ह्रस्व वर्ण कहलाते हैं। **जैसे**- अ, इ, उ, ऋ इसकी एक मात्रा मानी जाती है। इसका चिन्ह (।) है।

दीर्घ-जिन वर्णों के उच्चारण में ह्रस्व से दुगुना समय लगे, वे दीर्घ वर्ण कहलाते हैं।

जैसे-आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। इसकी दो मात्रायें मानी जाती हैं। इन्हें गुरू की संज्ञा दी जाती है। इसका चिन्ह है (S)।

2. मात्रा- किसी स्वर के उच्चारण में जितना समय लगता है उसे मात्रा कहते हैं।

3. यति-छन्दों को पढ़ने के समय जिन स्थानों पर विराम लेना पड़ता है। उसी विराम स्थल को यति कहते है।

4. गति-कविता को पढ़ते समय जिस प्रवाह के साथ छन्द पढ़ा जाता है, उसे गति कहते हैं।

5. तुक- छन्दों के पदों के अंतिम वर्णो में जो समानता पाई जाती है, उसे तुक कहते हैं।

6. लघु- ह्रस्व मात्रा को लघु कहा जाता है जिसका चिन्ह (।) है।

7. गुरू- दीर्घ मात्रा को गुरू कहा जाता है जिसका चिन्ह है (S)

8. गण- वार्णिक छन्दों में लघु, गुरू, का क्रम बनाये रखने के लिए गणों का प्रयोग किया जाता है। गणों की संख्या आठ मानी गई है। ये हैं-यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण इन गणों के लिए एक सूत्र बनाया गया है जो इस प्रकार हैं।

। S S S । S । । । S
य मा ता रा ज भा न स ल गा

इस सूत्र में आरम्भ के आठ अक्षर प्रत्येक गण के सूचक हैं। अन्त के दो अक्षर लघु और गुरू के सूचक हैं।

लघु और गुरु के नियम

(क) अ, इ, उ जैसे वर्ण युक्त रचना को लघु माना जाता है।
जैसे-'रमन' इसमें तीनों वर्ण लघु हैं।
(ख) ह्रस्व स्वर पर जब चन्द्रबिन्दु लगता है तब भी वह लघु होता है।
(ग) आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ की मात्रा से युक्त वर्ण गुरू होते हैं।
(घ) अनुस्वार युक्त वर्ण गुरू होता है।
जैसे- 'चंचल' में 'चं' वर्ण गुरू है।
(ड़) विसर्ग युक्त वर्ण भी गुरू होता है।
जैसे-'प्रातः' में 'तः' वर्ण गुरू है।
(च) संयुक्त वर्ण के पूर्व का वर्ण गुरू होता है।

वर्ण और मात्रा के आधार पर छन्द के चार भेद होते हैं।
1. मात्रिक 2. वार्णिक 3. उभय 4. मुक्तक।

1. मात्रिक छन्द - इन छन्दों में मात्राओं की समानता का ध्यान तो रखा जाता है किन्तु वर्णों की समानता पर नहीं। कुछ प्रमुख मात्रिक छन्द इस प्रकार है।

(क) दोहा- इसके चार चरण होते हैं। पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्रायें, दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्रायें होती हैं।
जैसे- मेरी भव बाधा हरौं, राधा नागर सोय।
जा तन की झाईं परे, श्याम हरित दुति होय।।

(ख) सोरठा- इसमें चार चरण होते हैं। पहले और तीसरे चरण में 11-11 मात्रायें, दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्रायें होती हैं। यह दोहे का उल्टा होता है।
जैसे- मूक होइ वाचाल पंगु, चढ़इ गिरिवर गहन।
जासू कृपा सो दयाल, द्रवहु सकल कलिमल दहन।।

(ग) चौपाई- इस छन्द में चार चरण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्रा होती हैं।
जैसे-निरखि सिद्ध साधक अनुरागे, सहज सनेहु सराहन लागे।
होत न भूतल भाउ भरत को,अचर सचर चर अचर करत को।।

(घ) रोला-इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 24 मात्रायें होती हैं।
जैसे- मदमाता जंग भला दीन दुख क्या पहिचाने,
दीनबन्धु बिनु कौन दीन हिय को जाने।
होता जो न आधार शोक में नाथ तुम्हारा,
निराधार यह जीव भटकता फिरता मारा।।

(ड़) कुण्डलियाँ- इसमें छः चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 24 मात्रायें होती हैं।
जैसे- रम्भा झुमत हौ कहा थोरे ही दिन हेत।
तुमसे केते हैं गये अरु द्वै हैं इति खेत।।
अरु द्वै हैं इति खेत मूल लघु खाता हीने।
ताहु पै गज रहे दोठि तुम पर अति दीने।।
बरनै 'दीन दयाल' हमें लखि होय अचम्भा।
एक जन्म के लागि कहा झुकि झुमत रम्भा।।

(च) बरवै- इसमें चार चरण होते हैं। प्रथम एवं तृतीय चरण में 12-12 मात्रायें, द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में 7-7 मात्रायें होती हैं।
जैस- वाम अंग शिव शोभित, शिवा अपार।
सरद सुवारिद में जनु, तड़ित विहार।।

(छ) उल्लाला- इसमें चार चरण होते हैं। विषय चरणों में 15-15 मात्रायें सम चरणों में 13-13 मात्रायें होती हैं।
जैसे- सब भाँति सुशासित हो जहाँ, समता के सुखकर नियम।
बस उसी स्वशासित देश में, जागें हे जगदीश हम।।

(ज) छप्पय- यह छः चरण वाला छन्द है। प्रथम चार चरण रोला के अंतिम दो चरण उल्लाला के होते हैं।
जैसे- जहाँ स्वतंत्र विचार न बदले मन में मुख में।
जहाँ न बाधक बने सबका निबलों के सुख में।।
सबको जहाँ समान निजोन्नति का अवसर हो।
शान्ति दायिनी निशा, हर्षसूचक वासर हो।।
सब भाँति सुशासित हो जहाँ, समता के सुखकर नियम।
बस उसी स्वशासित देश में जागे जगदीश हम।।

2. वार्णिक छन्द- जिन छन्दों को केवल वर्ण गणना के आधार पर रचा गया है वह छन्द वार्णिक छन्द कहलाते हैं। वार्णिक छन्द के सभी चरणों में वर्णों की संख्या का ध्यान रखा जाता है।

(क) इन्द्रवज्रा- इस छन्द में 11 वर्ण होते हैं प्रत्येक चरण में दो तगण एक जगण और दो गुरू वर्ण मिलाकर 11 वर्ण होते हैं।
जैसे- जागो उठो भारत देशवासी, आलस्य त्यागो न बनो विलासी।
ऊँचे उठो दिव्य कला दिखाओ, संसार में पूज्य पुनः कहलाओ।।

(ख) कवित्त- इस छन्द में प्रत्येक चरण में 16 और 15 पर विराम के साथ 31 वर्ण होते हैं तथा चरणान्त में अंतिम वर्ण गुरू होता है।
जैसे- दीठि चका चौंधी भई देखत सुवर्ण मई,
एक ते एक आछे द्वारिका के भौन हैं।
पूछे बिन कोऊँ कहूँ काहू सो न बात करे,
देवता से बैठे सब साधि-साधि मौन हैं।।

(ग) द्रुत विलम्बित- इसके प्रत्येक चरण में नगण, भगण, भगण, रगण के क्रम कुल 12 वर्ण होते हैं।
जैसे- न जिसमें कुछ पौरुष हो यहाँ, सफलता वह पा सकता कहाँ।

(घ) मालिनी- इसके प्रत्येक चरण में दो नगण, मगण, यगण, यगण के क्रम से कुल 15 वर्ण होते हैं तथा 7-8 वर्णों पर यति होती है।
जैसे- पल-पल जिसके मैं पन्थ को देखती थी।
निशि-दिन जिसके ध्यान में थी बिताती।।

(ड़) मदाक्रान्ता- इसके प्रत्येक चरण में भगण, मगण, नगण, तगण के क्रम से कुल 17 वर्ण होते हैं। जिसमें क्रम से दो गुरू भी होते हैं। इस छन्द में 10-7 पर यति होती है।
जैसे- फूली डालें सुकुसुममयी तीय की देख आँखें।
आ जाती है मुरलीधर की मोहिनी मूर्ति आगे।

(च) वसन्त तिलका- इसके प्रत्येक चरण में तगण, भगण, जगण, जगण और दो गुरू के क्रम से 14 वर्ण होते हैं।
जैसे- आए प्रजाधिप निकेतन पास ऊधो।
पूरा प्रसार करती करुणा जहाँ थी।।

(छ) उभय छन्द- गणों में वर्णों का बंधा होना प्रमुख लक्षण होने के कारण इसे उभय छन्द कहते हैं। इन छन्दों में मात्रा और वर्ण दोनों की समानता बनी रहती हैं।
जैसे- पल-पल जिसके मैं पथ को देखती थी।
निशि-दिन जिसके ही ध्यान में थी बिताती।।

(ज) मुक्त छन्द- जिस विषम छन्द में वर्णिक या मात्रिक का कोई प्रतिबन्ध न हो। चरणों की अनियमित, स्वच्छन्द गति नाद एवं ताल के आधार पर भावानुकूल लय का विधान ही मुक्तक छन्द है। आधुनिक कविता इसी छन्द में लिखी जा रही है।
जैसे- वह तोड़ती पत्थर, देखा मैने उसे, इलाहाबाद में पथ पर।।

अलंकार

अर्थ- अलंकार का अर्थ होता है- आभूषण या शृंगार। अतः काव्य के आभूषण अर्थात सौंदर्य-वर्धक गुण अलंकार कहलाते हैं। अलंकार स्वयं सौंदर्य नहीं होते, वे काव्य के सौंदर्य को बढ़ाने वाले सहायक तत्व होते हैं। अलंकारों के योग से काव्य मनोहारी बन जाता है।

अलंकारों के भेद- काव्य में शब्द और अर्थ दोनों की बराबर सत्ता रहती है। शब्द-प्रयोग के कारण काव्य में सौंदर्य उत्पन्न होता है कहीं अर्थ चमत्कार के कारण।
जहाँ शब्द के कारण चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ शब्दालंकार होते हैं। इसके विपरीत जहाँ अर्थ के कारण काव्य में आकर्षण आता है, वहाँ अर्थालंकार होते हैं।

शब्दालंकार

शब्दों में पाये जाने वाले अलंकार अनेक हैं। उनमें से कुछ प्रमुख अलंकार इस प्रकार हैं-

1. अनुप्रास अलंकार- जहाँ व्यंजनों की आवृत्ति के कारण काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।
जैसे-कल कानन कुंडल मोरपखा, उर पे बनमाल विराजति है।
(क) क व्यंजन की आवृत्ति।
(ख) विमल वाणी ने वीणा ली। ('व' की आवृत्ति)।
(ग) सुरभित सुंदर सुखद सुमन तुझ पर खिलते हैं।('स' की आवृत्ति)।
(घ) मधुर-मधुर मुस्कान मनोहर, मनुज वेश का उजियाला ('म' की आवृत्ति)।

2. यमक अलंकार- जहाँ एक शब्द बार-बार आये किंतु उसका अर्थ बदल जाये, वहाँ पर यमक अलंकार होता है। **जैसे**-
(क) काली घटा का घमण्ड घटा। (घटा- बादल, घटा- कम हुआ)।
(ख) तौ पर वारौं उरबसी, सुन राधिके सुजान।
तू मोहन के उर बसी, छवै उरबसी समान।।
(उरबसी- हृदय में बसी, उरबसी- एक अप्सरा)।
(ग) जेते तुम तारे तेते, नभ में न तारे हैं।
(तारे- उद्धार किया, तारे- सितारे)।
(घ) कहै कवि बेनी बेनी ब्याल की चुराई लीनी।
(बेनी- कवि का नाम, बेनी- चोटी)।

3. श्लेष अलंकार- जहाँ एक शब्द के एक से अधिक अर्थ निकलें, वहाँ श्लेष अलंकार होता है। **जैसे**-
(क) जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोई।
बारे उजियारो करे, बढ़े अँधेरों होई।।
यहाँ 'बारे' शब्द के दो अर्थ है- 'जलाने पर' तथा 'बचपन में'। 'बढ़े' के दो अर्थ हैं- 'बड़ा होने पर' तथा 'बुझने पर'।
(ख) सुबरन को खोजत फिरत कवि, व्यभिचारी, चोर।
यहाँ सुबरन का अर्थ है- अच्छे वर्ण वृत्त, सुंदर स्त्री, सोना।
(ग) मधुबन की छाती को देखो, सूखी कितनी इसकी कलियाँ।
'कलियाँ' = फूल का अविकसित रूप, यौवन से पूर्व की अवस्था।
(घ) मंगन को देख पट देख बार-बार हैं।
यहाँ 'पट' शब्द के दो अर्थ हैं- 'वस्त्र' एवं 'किवाड़'।

अर्थालंकार

1. उपमा अलंकार- जब किसी वस्तु या व्यक्ति की विशेषता दर्शाने के लिए उसकी समानता उसी गुण के समान किसी अन्य वस्तु या व्यक्ति से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है।
जैसे- (क) वह दीपशिखा सी शांत भाव में लीन।
(ख) उषा-सुनहले तीर बरसती, जय-लक्ष्मी सी उदित हुई।
(ग) असंख्य कीर्ति रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह सी।
(घ) नील कमल से सुंदर नैन।

2. रूपक अलंकार- जहाँ गुण की अत्यंत समानता दर्शाने के लिए उपमेय और उपमान को 'अभिन्न' कर दिया जाये, वहाँ रूपक अलंकार होता है।
जैसे- (क) मैया मैं तो चंद खिलौना लैहों।
(ख) एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास।
(ग) पायो जी मैने राम-रतन धन पायो।
(घ) वन-शारदी चंद्रिका-चादर ओढ़े।

3. उत्प्रेक्षा अलंकार- जहाँ उपमेय और उपमान की समानता के कारण उपमेय में उपमान की संभावना की जाये, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसके वाचक शब्द हैं- मनु, मानो, जनु, जनहु, मनहु आदि।
जैसे- (क) पाहुन ज्यों आये हो, गाँव में शहर के।
(ख) मनु दृग फारि अनेक जमुन निरखत ब्रज शोभा।
(ग) सिर फट गया उसका मानो अरुण रंग का घड़ा।
(घ) ले चला साथ में तुझे कनक ज्यों भिक्षु लेकर स्वर्ण-झनक।

4. अतिशयोक्ति अलंकार-जहाँ किसी गुण या स्थिति का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाये, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।
जैसे- (क) देख लो साकेत नगरी है यही।
स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।।
(ख) कढ़त साथ ही म्यान ते। असि रिपु तन ते प्रान।।
(ग) आगे नदियाँ थी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक उस पार।।
(घ) जिस वीरता से शत्रुओं का सामना उसने किया।
असमर्थ हो उसके कथन में मौन वाणी ने लिया।।

5. अन्योक्ति अलंकार- जहाँ किसी उक्ति के माध्यम से किसी अन्य को कोई बात कही जाये, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है।
जैसे- (क) फूलों के आसपास रहते हैं।
फिर भी काँटे उदास रहते हैं।
(ख) नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सौं बँध्यों, आगे कौन हवाल।।

WWW.SARKARIHELP.COM
WWW.SARKARIHELP.COM